मेहनतकशों का पैग़ाम मेहनतकशों के नाम

मज़दूर मोर्चा

साप्ताहिक

Email : mazdoormorcha365@gmail.com
www.mazdoormorcha.com

Postal Reg. No. L-2/FBD/463/2020-22 /R.N.I. No. 2022007062

ईएसआई मेडिकल कॉलेज अस्पताल कर्मियों के आपसी झगड़े से हड़कंप 2
आयकर विभाग केवल आम आदमी को लूटने के लिए 4
पंजाब एवं हरियाणा हाईकोर्ट के 11 नये जजों में एक भी सिख नहीं 5
भाजपा में थके-हारे नेताओं का संसदीय बोर्ड 6
पुलिस व नगर निगम जबानी जमा खर्च में जुटे हैं 8

वर्ष 36 | अंक 42 | फरीदाबाद | 28 अगस्त-3 सितम्बर 2022 | फोन-8851091460 | ₹ 5.00

अम्मा ने अस्पताल बनाया, मोदी ने चमकाया लोकार्पण

माल कम्पनी का, मशहूरी मुफ्त में

फ़रीदाबाद (म.मो.) अमृतानंदमयी मठ द्वारा ग्रेटर फ़रीदाबाद के सेक्टर 88 में 2600 बेड का अस्पताल बनाया गया है। करीब 6 हजार करोड़ की लागत, कुछ लोगों के अनुसार 4 हजार करोड़ की लागत से 133 एकड़ में बने इस अस्पताल का पूरा खर्चा अम्मा के ट्रस्ट ने उठाया है। यानी ये पूरी तरह से निजी क्षेत्र का उपक्रम है। आगामी एक-दो वर्ष में यहां मेडिकल कॉलेज भी शुरू करने की योजना बताई जा रही है।

देश के सबसे बड़े बताये जा रहे इस अस्पताल का लोकार्पण दिनांक 24 अगस्त को भारत के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने किया। रैली में उपस्थित होने वाली भीड़ में दक्षिण भारतीयों की संख्या काफ़ी अधिक

होने की सम्भावना को समझते हुए, एक कुशल मदारी की तरह मोदी कुछ जुमले मलयाली भाषा में रट कर आये थे। क्षेत्र विशेष के लोगों का मन जीतने के लिये यह फार्मूला मोदी जी हर क्षेत्र में आजमाते रहे हैं। यहां भी उनका निशाना ठीक बैठा और खूब तालियां बटोरी।

अपने 19 मिनट के भाषण के दौरान मोदी जी ने अस्पताल तथा इसे बनाने वाली अम्मा की जमकर तारीफ़ करते हुए इसे न केवल फ़रीदाबाद बल्कि पूरे एनसीआर के लिये एक वरदान बताया। अम्मा ने तो बिना कोई इन्कम टैक्स, जीएसटी, उत्पाद शुल्क आदि वसूले बगैर ही इतना बड़ा अस्पताल बना दिया। लेकिन मोदी जी ने आठ साल तक इस देश की जनता को लूटने के बाद क्या बनाया? किसी एक अस्पताल, किसी एक यूनिवर्सिटी किसी एक आईआईटी का नाम तो बताते। बनाना तो क्या था बने बनाये संस्थानों में आधे से अधिक पद रिक्त पड़े हैं। दूर क्या जाना यहां का बीके अस्पताल और छांयसा का अटल बिहारी मेडिकल कॉलेज ही देख लो।

इसी भाषण के दौरान उनके मन में छिपा 'पीपीपी' मॉडल भी निकल कर बाहर आ गया। विदित है कि इस मॉडल में बड़ा निवेश तो पब्लिक का होता है और प्रौफिट प्राईवेट पार्टनर का होता है। इसमें ऐसी-तैसी पब्लिक की होती है। इसका उदाहरण स्थानीय ईएसआई मेडिकल कॉलेज में ठेके

शेष पेज दो पर

मोदी के आशीर्वाद से अडानी निकला एनडीटीवी के शिकार पर

गिरीश मालवीय

महज पांच महीने पहले 26 अप्रैल को पीएम मोदी के यार पूंजीशाह गौतम अदानी एक कंपनी एएमजी मीडिया नेटवर्क्स के गठन की घोषणा करते हैं और अगले महीने ही वह शिकार करते हैं राघव बहल का.....

मई के मध्य में ही अदानी जी राघव बहल द्वारा संचालित डिजिटल बिजनेस न्यूज प्लेटफॉर्म क्विंटिलियन बिजनेस मीडिया में 49 फीसदी की हिस्सेदारी खरीद लेते हैं।

द क्विंट एक अंग्रेजी और हिंदी पोर्टल है। जिसका संचालन क्विंट डिजिटल मीडिया लिमिटेड करता है। यह पोर्टल इंडियन इकोनॉमी, इंटरनेशनल फाइनेंस, कॉर्पोरेट कानून और शासन समेत अनेक विषयों पर पर अपनी निष्पक्ष न्यूज़ देने के लिए जाना जाता था।

लेकिन अडानी का क्विंट को खरीदना उनका पहला शिकार नही था। कुछ साल पहले वह EPW नाम के प्रतिष्ठित अंग्रेज़ी जर्नल के संपादक के पद पर बैठे परंजय गुहा ठाकुरता का शिकार कर चुके थे।

दरअसल परंजय ने ईपीडब्ल्यू में दो खबर छापी थी। पहली थी, क्या अडानी समूह ने 1000 करो? रुपये के कर की चोरी की? (प्रकाशन तिथि- 14 जनवरी, 2017) और दूसरी थी मोदी सरकार द्वारा अडानी समूह को 500 करोड़ रुपये का फायदा (प्रकाशन तिथि- 24 जून, 2017)।

इन दोनो खबरों के छपने से अडानी इतने नाराज हुए कि जर्नल के मालिकों पर उन्होंने मानहानि के भारी भरकम दावे ठोकने की धमकी दी, घबराए मालिको ने ट्रस्ट की बैठक बुलाई और लेख हटाने का फैसला कर लिया। इधर लेख हटाने का फैसला हुआ और उधर छापनेवाले संपादक प्रंजॉय गुहा ठाकुरता ने इस्तीफा दे दिया। अब इन्हीं गौतम अदानी ने एनडीटीवी का शिकार किया है।

दरअसल एनडीटीवी के मालिक प्रणय रॉय ने वर्ष 2008 में एक नई कंपनी- आरआरपीआर होल्डिंग्ज़ प्राइवेट लिमिटेड बनाई थी और इंडिया बुल्स से 501 करोड़ रुपए का कर्ज़ लिया था। फिर इसी कंपनी के ज़रिये उन्होंने एनडीटीवी के बहुत सारे शेयरों को ख़रीदा।

इंडियाबुल्स के कर्ज़ को चुकाने के लिए आरआरपीआर होल्डिंग्ज़ प्राइवेट लिमिटेड ने आईसीआईसीआई बैंक से 375 करोड़ रुपए का ऋण लिया जिसकी ब्याज दर 19 प्रतिशत तय हुई। यह बात अक्टूबर 2008 की है। अगस्त 2009 में आरआरपीआर होल्डिंग्ज़ प्राइवेट लिमिटेड को एक और कंपनी - विश्वप्रधान कमर्शियल प्राइवेट लिमिटेड मिल गई जिसने आईसीआईसीआई का लोन चुकाने के लिए सहमति भर ली। लोन की शर्त यह थी कि न चुकाने पर 350 करोड़ और ब्याज मिलाकर इक्विटी में बदल जायेगा।

यही पर प्रणय रॉय के साथ गेम हो गया। अब पता चला कि अदानी ने विश्वप्रधान कमर्शियल प्राइवेट लिमिटेड को ही खरीद लिया और इसके बूते वह 29 फीसदी के मालिक बन बैठे हैं। अडानी कंट्रोलिंग स्टेक के लिए एनडीटीवी में 26 फीसदी हिस्सेदारी और

शेष पेज दो पर